जो बाबा ने कहा दादी ने किया

ब्र.कु. संतोष दीदी,मैनेजमेंट कमेटी डायरेक्टर और महाराष्ट्र व आन्ध्र प्रदेश की निर्देशिका

जब शुरू-शुरू में मैं बाबा के पास आई और पहली बार जब बाबा से मिली तो बाबा ने मुझे पूना में दादी जानकी के पास भेज दिया। वैसे तो मैंने मुम्बई में मम्मा से ज्ञान लिया। बाबा ने कहा तुम वहाँ मुम्बई में ही रहो। हमारी लौकिक बहनें वहाँ क्लास में आती थी तो हमने कहा बाबा हमें लौकिक से दूर जाना है। हमारी अवस्था परिपक्त बनेगी इसलिए फिर बाबा ने कहा ठीक है मुम्बई पूना के बहुत नज़दीक है तो आप पूना में दादी जानकी के पास जाकर रहो। तब मैं छोटी थी यही कोई 16-17 वर्ष की होगी। कॉलेज में पढ़ती थी मैंने फस्ट इयर किया था। और फिर बाबा से मिलने के बाद, बाबा को देखने के बाद तो पढ़ाई उधर ही रह गई। वैसे मुझे एल.एल.बी. करना था लेकिन मम्मा ने कहा कि काले कोट वाला वकील तुमको नहीं बनना है। तो मम्मा ने मेरा वहीं नशा उतार दिया था। फिर मैं दादी जानकी के पास पूना में जाकर रही। दादी ने अलौकिक जीवन क्या होता है इसकी बहुत अच्छी ट्रेनिंग अपने कर्मों के द्वारा हमें दी। क्योंकि हमने दादी को देखा कि दादी खुद के ऊपर कितनी मेहनत करती है। औरों के ऊपर तो करती थी लेकिन खुद के ऊपर भी बहुत मेहनत करती थी। अमृतवेले उठकर बाबा को याद करती थी। उस समय हम पूना में गोलीबार मैदान के पास सरला दीदी, कमला बहन जो हॉन्गकॉन्ग में है वो, सुन्दरी बहन हम चार बहनें रहती थीं। वो पारसी का घर था।

दादी में कितनी सहनशक्ति थी वो हमने वहाँ देखा। पारसी भी पास में ही रहता था। उसने आधा पोरशन हमको दिया हुआ था। और ये चाहता था कि हम वो घर छोड़ें। इसके लिए वो हमेशा ही सताता था। परन्तु दादी उसको बहुत ही शुभ वायब्रेशन देती थी और हम लोगों को भी कहती थी कि शुभ वायब्रेशन दो। वो यहाँ तक भी करता था जो पार्टीशन था विज़िटिंग रूम में, तो उसमें से वो अंडे के छिलके फेंकता था। हमें बहुत खराब लगता था लेकिन दादी बोलती थी कि तुम ध्यान मत दो, कोई नहीं आपे ही ठीक हो जायेगा। फिर एक दिन सब सेवा के लिए गये हुए थे, दादी भी नहीं थी। तो उस पारसी ने हमारी बाहर पड़ी खटिया को जला दिया। मैं तो छोटी थी तो मुझे तो बहुत रोना आया। दादी आईं तो दादी ने बोला तुम क्यों रो रही हो? तो मैंने कहा कि देखो ना उसने खटिया जला दी। उस समय सिर्फ मैं और कमला दीदी हॉन्गकॉन्ग वाली ही थे।

कमला ने कहा कि पहले खटिया तो बुझाओ। जब दादी को बताया तो दादी ने कहा कोई बात नहीं जाने दो। जल गई तो जल गई। मैं कितने वर्ष तक वहीं थी क्योंकि जब तक दूसरा मकान न मिले तो तब तक मकान छोड़ नहीं सकते थे। तो हम देखते थे कि दादी सवेरे उठकर बाबा को याद करती थी और हम लोग भी सभी उठते थे। हम सब छोटे-छोटे थे और जवान थे तो नींद का ज़्यादा असर होता था। फिर कभी नहीं भी उठते थे। उस समय जल्दी उठकर दादी हमारे लिए चाय बनाती थीं। दादी भोजन भी बहुत सुन्दर बनाती थीं। और मैं दादी को बोलती थी कि दादी मैं क्या सेवा करूँ? तो दादी बोलती थी कि तुम हुनमान हो। तुम्हारा काम है मुर्छित को सुरजीत करना। अब ज्ञान तो इतना समझ में नहीं आता था। मैंने पूछा मूर्छित को सुरजीत कैसे करना है? दादी ने कहा कि जो ज्ञान में ठण्डे हो जाते हैं ना उनको जाकर तुम ज्ञान सुनाओ। जो भी आना थोड़ा बंद कर देते थे या नहीं आते थे, या बीच बीच में आते थे तो दादी मुझे उन माताओं के घरों में भेजती थी।

दादी ने मुझे कोर्स करवाना भी सिखाया।

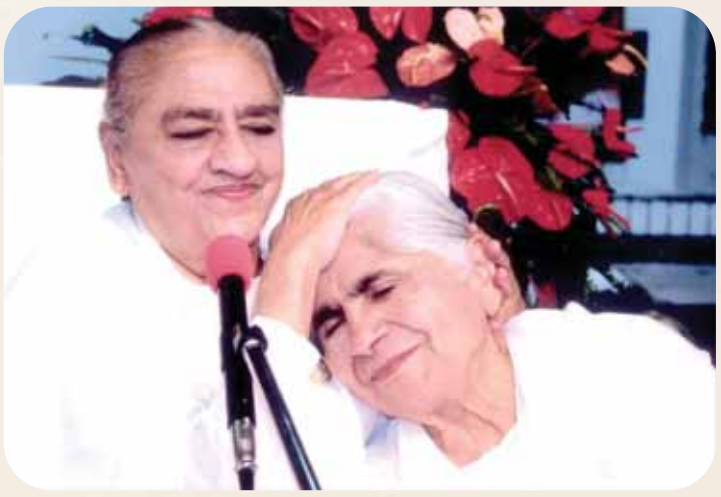

फिर उसके बाद दादी ने मुझे कहा कि अभी जो नये आते हैं ना उनको तुम कोर्स कराओ। मैंने कहा अच्छा मैं करवाऊं? दादी ने कहा हिम्मत करो आ जायेगा तुमको। फिर मैं एक दिन जिज्ञासु को सृष्टि चक्र के चित्र पर समझा रही थी तो उस वक्त कोई न कोई मुझ पर ध्यान रखता था कि मैं कैसे समझाती हूँ। मैं सृष्टि चक्र के बारे में समझा रही थी कि सृष्टि चक्र में चार युग होते हैं, देखो सतयुग में दो बच्चे होते हैं। और फिर उन्होंने पूछा बहन जी त्रेता में कितने होते हैं? तो मैं मूंझ गई। तो त्रेता नाम सुना तो मैंने कहा कि त्रेता में तीन होते हैं, फिर उन्होंने पूछा कितना बच्चा और कितनी बच्चियां? तो मैंने थोड़ा सोचकर कहा कि किसी को दो लड़के और एक लड़की होती है और किसी को दो लड़की और एक लड़का होते हैं। तो मैं ऐसा समझा करके आ गई। फिर मुझसे पूछा कि आज क्या समझाया? मैंने बताया कि दादी मैंने ऐसा-ऐसा समझाया। तो दादी बोली अच्छा समझाया तुमने। दादी हमारे ऊपर बहुत ध्यान देती थी।

हमको यहाँ तक ही नहीं बल्कि खाना कैसे खाते हैं, क्या खाना चाहिए, कैसे बनाना है और सारी ईश्वरीय मर्यादाएं क्या होती हैं ये सब गहराई से सिखाया। दादी की सादगी जबरदस्त थी, जिसके कारण हमें बहुत कुछ सिखने को मिला। कभी-कभी दादी एक कोने में बैठी हुई होती थी। तो एक दिन मैं बोली दादी आप क्या कर रहे हो बैठकर। तो दादी बोली मैं मेरे को कूट रही। मैंने पूछा आप ऐसे कैसे कूट रहे दिखाई तो कुछ नहीं पड़ता, क्या कूट रहे? दादी ने कहा मैं बैठकर ज्ञान को कूटती। इस तरह से विचार सागर मंथन करने की टेव दादी में पहले से ही थी। दादी ने हमें यज्ञ की हर वो सूक्ष्म ते सूक्ष्म बातें कैसे मर्यादा में रहना है और कैसे दूसरों को बाबा का ज्ञान देना है ये सब हमें दादी जानकी ने अपने कर्म द्वारा बड़ी सूक्ष्मता के साथ सिखाया और हमारे अन्दर हमेशा उमंग-उत्साह भरा और योग्य बनाया।

दादी ने सर्वस्व सफल किया और कराया

ब्र.कु. मदनलाल शर्मा(जयपुर), उपाध्यक्ष व्यापार और उद्योग विंग

सन् 1966 में पहली बार मेरा और मेरी युगल रुकमणी का दादी जानकी से पुणे में मिलना हुआ। लेकिन वहाँ पर दादी द्वारा जो सेवा हुई वो एक यादगार बन गयी। इसके बाद हम जब भी दादी से मिलते दादी भी उस मिलन की याद ज़रूर दिलाती। दादी का वह सम्मोहक व्यक्तित्व हमें ज्ञान में आगे बढ़ाने में निरन्तर सहयोग देता रहा है।

सन् 1998 में मैं, दादी गुलज़ार व गोपाल भाई के साथ लंदन आध्यात्मिक यात्रा पर गए हुए थे। आते समय ऑक्सफोर्ड सेंटर पर ठहरे। यहाँ पर दादी जानकी ने मुझे बुलाकर कहा कि मेरी इच्छा है कि तुम कुछ दिन यहाँ ठहरो। मैं वहाँ पर एक महीने रहा तथा पूर्ण रूप से मेरे खानपान व दिनचर्या का ध्यान रखा। दादी की इस तरह की मेहमान नवाजी व आदरभाव मुझे बार-बार साकार बाबा की याद दिलाता था। मेरे जीवन में साकार बाबा ने तो कमाल किया ही है लेकिन दादी जानकी भी कम नहीं थीं। बीच-बीच में मेरा खूब ध्यान रखती थीं। सन् 2003 में कोई समस्या थी तो दादी ने जयंती बहन को भेज कर मुझे लंदन आने का निमंत्रण दिया। इसी से समझ आता है कि यह महान आत्मायें बेहद में भी सभी का कितना ख़याल रखती हैं और अपने आप ही मुख से निकलता है कि बाबा तेरा कितना कमाल है।

सन् 2012 में बाबा ने मधुबन में प्रेरणा दी कि जयपुर में एक और नया व बड़ा सेंटर खोलें। मैंने जयपुर वापस पहुँच कर मकान लेने की कोशिश की। बाबा की कमाल थी कि सेंटर के लायक़ बड़ा मकान बिना किसी मेहनत के ही मिल गया। राजस्थान जोन की इंचार्ज दादी रतनमोहिनी ने भी अनुमति दे दी लेकिन बाद में संचालन को लेकर कुछ बाधा आयी तो दादी जानकी ने एक सेकण्ड में तय कर दिया कि शर्मा बाबा का अनन्य बच्चा है उनके साथ सब मिलकर सेवा करो। आज दादी के आशीर्वाद से सेंटर तो अच्छा चल ही रहा है, साथ में 3000 वर्ग गज के भूखंड पर विशाल व भव्य भवन बाबा ने बनवा दिया।

इस भवन का नाम पीस पैलेस है जो सीकर रोड जयपुर हाइवे पर प्राइम लोकेशन पर है। यहाँ क़रीब 100 भाई और बहनों के ठहरने की व्यवस्था है। यह दादी का ही कमाल है जो सभी का भाग्य बनाने में हमेशा तत्पर रहती थीं। सफल करो और सफलता पाओ के स्लोगन को पूरा करने में भी दादी का उत्कृष्ट योगदान रहा है। इसलिए दादी का इस मामले में मैं पूरा कृतज्ञ हूँ।

चार साल पहले मुझे कैंसर हुआ था। छह कीमो लेने पड़े। कैंसर भयानक था बचना मुश्किल था लेकिन बाबा ने बचा लिया। डॉक्टर भी इस पर आश्चर्य करते हैं। कैंसर से ठीक होने के एक साल बाद मुझे चिकनगुनिया और डेंगू हुआ। यही भयावह स्थिति थी फिर भी बाबा ने बचा लिया। लेकिन एक साथ होने से मुझे कई रोज़ बिस्तर पर ही पड़े रहना पड़ा। थोड़ा बहुत शरीर का हिसाब-किताब चल रहा था। बाबा ने दादी का मुझे शक्तिरूप अनुभव कराया और शरीर का बाक़ी हिसाब-किताब चुकतू कराने का अनुभव प्रैक्टिकल में करा दिया। मेरे लिए व सबके लिए यह एक आश्चर्य ही है, बाबा ने बचाकर मुझको 90 वर्ष की उम्र में पहले से भी अधिक स्वस्थ कर दिया। दादियों की तपस्या और पालना के द्वारा ही आज मैं स्वस्थ हूँ और खुशी से बाबा की सेवा कर रहा हूँ। एक बार फिर से दादी जानकी को शत-शत प्रणाम।

दादी खुद भी लाइट रहीं, हमें भी बनाया लाइट

ब्र.कु. जयंती दीदी (यू.के.डायरेक्टर)

दादी जब लंदन में पहुँची तो उस समय विश्व में दो सेन्टर्स थे। एक था लंदन और दूसरा था हॉन्गकॉन्ग। एक छोटे से घर में गीता पाठशाला के रूप में सेन्टर चलता था। तब वहाँ पर शायद आठ-दस भाई बहन होंगे। तब दादी जानकी शाम के समय पहली बार लंदन पहुँची। उस समय प्रदर्शनी की तैयारी हो चुकी थी। जिसके लिए जगदीश भाई ने नये चित्र बनाये थे। तो उस निमित्त रमेश भाई, उषा बहन, डॉ. निर्मला और मोहिनी बहन ये सब वहाँ थे। बहुत छोटा-सा स्थान था। दादी ने पहुँचते ही पूछा कि सवेरे का क्लास कितने बजे होता? तो डॉ. निर्मला उस समय निमित्त थीं वहाँ। उन्होंने कहा कि दादी अभी तो आप आये ही हों थोड़ा रिफ्रेश हो जाओ, फिर जितने बजे भी आप कहो। आराम से 8 बजे भी हो सकता। तो डॉ. निर्मला हँस के कहती हैं कि क्लास में हम सभी तो होंगे। तो दादी ने पूछा कोई और नहीं आता? हम एक दो को देखने लगे और कहा कि सवेरे तो और कोई नहीं आता, हम ही होते हैं। तो दादी ने कहा अच्छा उनको फोन घुमाओ जो योग्य आत्मायें हैं, उनको बुला लो। तो उस समय हम सब घर वाले थे और एक भाई आ करके पहुँचा। तब दादी ने क्लास करायी।

दादी देखती थीं कि डॉ. निर्मला बहन और मोहिनी बहन शॉपिंग करने जाती थीं तो दोनों हाथों में थैलियां भर करके आती थीं। तो दादी ने तुरंत ही कहा अच्छा ऐसे करना होता? अच्छा ठीक है। फिर दादी ने जो भी आने वाले थे उन्हों की बहुत प्यार से पालना की, उन्हों को समझाया कि बाबा की सेवा में सहयोगी कैसे बनना होता है। तो धीरे-धीरे थोड़े समय के अन्दर ही बहुत कुछ दादी ने चेंज कर लिया। ये था दादी का त्याग। परन्तु दादी ने यही भावना रखी कि जो पालना मुझे बाबा से मिली है, अभी औरों को देनी है।

दूसरा जो विदेश में जाते समय बाबा ने दादी को कहा कि मधुबन का मॉडल बनाना है। तो दादी ने इस बात को कई बार दोहराया। मधुबन का मॉडल माना "मधुबन का सिस्टम, मधुबन के नियम, मधुबन का वातावरण, मधुबन की प्राप्ति जो भी बाबा के घर में आये तो उन्हें मधुबन जैसा ही अनुभव हो।''

इस तरह 1970 में जैसे कि स्पेन, अमेरिका, कनेडा जर्मनी आदि कुछ देश में बाबा की सेवाएं शुरु हुई, फिर 1980 में बहुत सारे देश में बाबा के सेवाकेन्द्र खुले। जब दादी प्रकाशमणि लंदन में आईं तो बहुत कोशिश की कि बहुत सुन्दर स्थान मिले दादी के लिए। तब बाजू के मकान के लिए बात चल रही थी लेकिन किसी न किसी कारण से हाथ से छूट जाता था। जब बड़ी दादी को बताया कि दादी आप आयेंगे तो बहुत सिम्पल स्थान होगा। तो दादी प्रकाशमणि ने बहुत प्यार से लिखा कि मैं जगह को थोड़ी देखने आ रही हूँ, मैं तो सब बाबा के बच्चों को देखने आ रही हूँ। और दादी प्रकाशमणि ने तो उस समय अकेले ट्रैवलिंग की।

एक दिन क्या था कि हम लोग प्रोग्राम से लौटे। तब तक करीब रात्रि के 10:00 बज चुके थे। थोड़ी देर बाद दादी प्रकाशमणि ने कहा अच्छा भोजन करते हैं क्या बना है? तो दादी जानकी मुझे देखे और मैं दादी को देखूँ। क्योंकि उस समय तो सुदेश बहन थीं, मैं थी, दादी जानकी थीं। और रमेश भाई भी उस वक्त आये हुए थे। दादी जानकी ने कहा कि दादी आप तब तक थोड़ा रिफ्रेश हो जाओ और फिर भोजन तैयार होगा। दस मिनट में भोजन तैयार हो गया था। बहुत सिम्पल लाइफ लेकिन बहुत खुशी और बहुत आनन्द की लाइफ।

इस तरह सेवा करते-करते बहुत विदेशी ब्राह्मण बन चुके थे। दादी के ज्ञान का मंथन, दादी का बाबा के साथ सम्बन्ध और यज्ञ के प्रति स्नेह भावना हर एक के अन्दर दादी वो बीज डालती रहीं।

2005 तक तो दादी जानकी को विदेश की भी सेवा, भारत की भी सेवा और विश्व की भी सेवा, वो सारा दादी करती रहीं। फिर 2005 में हम डर्बन(साउथ अफ्रीका) में थे। जब दादी गुल्जार का फोन आया कि बाबा कहते हैं कि आपको भारत में तुरन्त आना है। तो मैंने कहा दादी(गुल्जार) कॉल ऑफ टाइम चल रहा है। तो दादी जानकी ने कहा कि तुम(जयंती) गुल्जार से दुबारा बात करो। दादी गुल्जार से पूछा बाबा छुट्टी देगा कि दादी और दो दिन रूके? और गुल्जार दादी कहे बाबा ने कहा अभी। बस फुलस्टॉप। तो दादी जानकी दो दिन भी ज़्यादा नहीं रूकी। और तब तक यू.के. में 44 सेवाकेन्द्र और अन्य 110 देशों में सेवाकेन्द्र खुल चुके थे। यही है दादियों का त्याग और दादी का बाबा पर और बाबा के कार्य पर निश्चय ही कहें।